

कुक्कुट पालन से आर्थिक सशक्तिकरण

श्रवन कुमार[1] और **स्तुति सिंह**[2]

" भारत में पोल्ट्री क्षेत्र बैकयार्ड फार्मिंग एवं छोटे पैमाने के मुर्गी पालन से बदलकर एक अत्यधिक संगठित और एकीकृत कृषि व्यवसाय एवं प्रमुख व्यावसायिक उद्योग में परिवर्तित हो गया है। इसमें आगे विस्तार की काफी संभावनाएं हैं। अब यह ग्रामीण एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदानकर्ता है, जो किसानों और कृषि उद्यमियों के लिए आय और रोजगार के अवसर प्रदान करता है। भारत में अंडों का उत्पादन सालाना लगभग 140 बिलियन होने का अनुमान है, जबकि ब्रॉयलर मांस का उत्पादन लगभग 4.5 मिलियन टन है। पशुपालन और डेरी विभाग (डीएएचडी), भारत सरकार एवं राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एनएलएम) विभाग पोल्ट्री फार्मिंग में उत्पादकता और उद्यमिता को बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से पोल्ट्री क्षेत्र को सक्रिय रूप से समर्थन देता है। "

मुर्गी पालन एक प्रकार का पशुपालन है, जिसमें मुर्गियों, बत्तखों, टर्की आदि पक्षियों को अंडे और मांस के उत्पादन के लिए पाला जाता है। यह व्यवसाय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल आहार में प्रोटीन प्रदान करता है, बल्कि रोजगार भी उत्पन्न करता है। इसमें मुख्यत: ब्रॉयलर पालन, लेयर पालन या फिर बैकयार्ड फार्मिंग आते हैं।

ब्रॉयलर पालन मांस उत्पादन के लिए किया जाता है। इसमें मुर्गियों को कम समय में तेजी से वजन बढ़ाने के लिए पाला जाता है। वहीं अंडे उत्पादन के लिए मुर्गियों की व्यवस्था को लेयर पालन कहते हैं। छोटे पैमाने पर घर के पीछे या आंगन में मुर्गियों को पालने की व्यवस्था को बैकयार्ड फार्मिंग कहते हैं।

मुर्गी पालन न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को रोजगार प्रदान करता है, बल्कि अंडे और मांस के उत्पादन से हुई आय लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने में एक महत्वपूर्ण साधन हो सकती है। इसके साथ-साथ मुर्गी पालन से निकलने वाले अपशिष्ट का उपयोग जैविक खाद के रूप में किया जा सकता है, जो मृदा की उर्वराशक्ति को बढ़ाने में कारगर है। पशुपालन और डेरी विभाग, भारत सरकार द्वारा मुर्गी पालन व्यवसाय को बढ़ाने हेतु समय-समय पर किसानों को मुर्गी पालन प्रशिक्षण एवं विभिन योजनाओं का लाभ प्रदान किया जा रहा है जैसे कि केंद्रीय कुक्कुट विकास स्कीम के तहत पशुधन विभाग द्वारा किसानों के बड़े समूह को मुर्गी पालन से जुड़ी नई तकनीकों की जानकारी दी जाती है। वहीं पशु चिकित्सकों की मदद से मुर्गी पालन के दौरान होने वाले रोगों की रोकथाम के लिए मुफ्त में दवाइयों का वितरण भी किया जाता है।

लाभकारी मुर्गी पालन के लिए निम्न विषयों की जानकारी का होना आवश्यक है:

बाजार/मार्केट सर्वेक्षण

मुर्गी पालन को व्यवस्थित करने से पहले आसपास की अंडे एवं मांस की मांग, इसका उत्पादन एवं आपूर्ति को गंभीरता से समझना महत्वपूर्ण है। अंडे, चिकन या ब्रॉयलर मीट की मांग के अनुसार ही मुर्गी पालन को अंडे या मांस के उत्पादन के लिए व्यवस्थित करें। ज्यादातर स्टार्ट-अप

[1]पशु विकृति विज्ञान विभाग, पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस (उत्तर प्रदेश); [2]पशु विकृति विज्ञान विभाग, पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर (उत्तराखंड)

के लिए किसान अपने मित्र, रिश्तेदार या पड़ोसी किसान के काम को देखते हैं और उससे फायदा उठाने की उम्मीद करते हैं। यह जरूरी है कि आप संभावित ग्राहकों से बात करने और उनकी बात सुनने के लिए अपना समय निकालें। आसपास के रेस्टोरेंट, होटल, खुली खाने की जगहों पर स्थित अंडे एवं मांस मार्केट का एक सर्वेक्षण करें और जितना संभव हो, उतना मांग का डेटा तैयार करें। इन उत्पादों के मौसमी रुझानों के बारे में सवाल पूछें, जिन्हें आप बाजार में लाने का इरादा रखते हैं। कभी-कभी धारणाएं सर्वेक्षण के नतीजों से मेल नहीं खा सकती हैं। इसलिए मूल योजनाओं को बदलने और नए फैसले लेने के लिए तैयार रहना आवश्यक है।

फार्म का स्थान

किसी भी प्रकार के मुर्गी फार्म को सुचारू रूप से संचालित रखने के लिए स्थान का उचित चयन अति आवश्यक है।



आवास प्रबंधन कुक्कुट में अहम पालन

स्वास्थ्य सुरक्षा

रोग के कारण होने वाली मृत्यु किसान के लाभ में बाधा का काम करती है और लाभ को कम करती है। मुर्गियों में रोग के कई मुख्य कारण हो सकते हैं जैसे कि प्रबंधन संबंधित कमियां, पालन-पोषण संबंधित रोग, बैक्टीरियल संक्रमण, वायरल संक्रमण, प्रोटोजोअन और परजीवी रोग आदि। उचित ब्रूडिंग, तापमान नियंत्रण, वेंटिलेशन, समय पर टीकाकरण तथा आर्द्रता के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण पानी की उपलब्धता और प्रत्येक समय पर्याप्त संतुलित आहार के प्रावधान से रोग से होने वाली मृत्यु दर को बहुत कम किया जा सकता है। टीकाकरण कार्यक्रम का प्राथमिकता के आधार पर चयन किया जाना चाहिए एवं इसका पेशेवर रूप से उन्नत पालन किया जाना चाहिए। मृत पक्षी के शव परीक्षण की जांच उचित निरीक्षक से करवानी चाहिए।

आवास व्यवस्था

उचित आवास व्यवस्था एक लाभकारी मुर्गी पालन व्यासाय के लिए अति आवश्यक है। फार्म हमेशा आयताकार एवं पूर्व-पश्चिम दिशा में होना चाहिए। शेड की साइड की दीवारें 3-5 फीट की ऊंचाई की होनी चाहिए। मुर्गियों का आवास खुला एवं हवादार होने के साथ-साथ वातानुकूल भी होना चाहिए, क्योंकि प्रतिकूल वातावरण में मुर्गियों की अधिक मृत्युदर हो सकती है। अधिक तापमान या गर्मी के मौसम में आवास खुला एवं हवादार होने के साथ उसमें लू से बचने की व्यवस्था होनी चाहिए, जबकि सर्दी के मौसम में आवास ढका होना चाहिए। वैज्ञानिक तौर पर मुर्गियों की आवास व्यवस्था विभिन्न तरीकों से की जा सकती है। इसमें डीप लिटर आवास व्यवस्था सबसे आम है, जहां पूरा फर्श चावल का भूसा या लकड़ी की छीलन से ढका होता है और फीडर और ड्रिंकर जैसे अन्य उपकरण केंद्र में स्थित होते हैं। यह सभी प्रकार के पक्षियों के लिए सबसे उपयुक्त है और पशु कल्याण आवश्यकता के अनुरूप है। बैकयार्ड फार्मिंग के लिए फ्री-रेंज प्रकार आम है, जिसमें मुर्गियों को रात में शेल्टर आवास प्रदान किया जाता है और खुले बाड़े में प्राकृतिक तरीके से चरने और घूमने की स्वतंत्रता दी जाती है।

पोल्ट्री फार्म कहीं भी एवं किसी भी सूखी जमीन पर स्थित हो सकता है। परन्तु यह शहर से दूर थोड़ा बाहर हो, तो ज्यादा ठीक रहता है। वातावरण सुगम होने के अलावा प्रदूषण भी काफी कम होना चाहिए। इसके अलावा बाजार जहां मांस और अंडे दोनों आसानी से बेचे जा सकें, वहां से फार्म की दूरी भी ज्यादा नहीं होनी चाहिए। फार्म बनाते समय ध्यान रखें कि यह खेत के उस हिस्से में हो, जहां पर सड़क की सुविधा उपलब्ध हो तथा वह नदी तटीय भूमि से दूर हो, जहां कभी-कभी बाढ़ और भूस्खलन की समस्या आती रहती है।

पोल्ट्री फार्म का क्षेत्रफल पोल्ट्री फार्मिंग की इकाई पर निर्भर करता है। मुर्गी पालन के लिए कई किसान छोटे फार्म हाउस से शुरुआत करते हैं और इसके लिए लगभग 15,000 से लेकर 30,000 वर्ग फीट तक की जगह का चयन किया जा सकता है, जबकि बड़े स्तर पर शुरुआत करने के लिए लगभग 50,000 वर्ग फीट जगह की जरूरत होती है।

नस्ल का चयन

लाभकारी मुर्गी पालन के लिए मुर्गी की नस्ल का चयन अति आवश्यक है। यदि व्यावसायिक लेयर्स रखना चाहते हैं, तो ऐसी नस्ल का चयन करें, जिसकी तेज विकास दर, कम मृत्यु दर, उच्च उत्पादन एवं रोग की कम दर हो। यदि यह मांस और अंडा उत्पादन दोनों के लिए है, तो उच्च आहार रूपांतरण दक्षता वाली नस्ल और अच्छे स्वादिष्ट एवं कोमल गुणवत्ता वाले मांस की तलाश करें।

अंडा उत्पादन के लिए लेग होर्न्स, रॉड्स आइलैंड रेड्स प्लमोथ रॉक्स जैसी नस्लें उचित हैं। जबकि मांस के लिए फास्ट ग्रोविंग ब्रीड जैसे कि कोर्निश क्रॉस, रोस 308, कोब्ब 500, हब्बार्ड, वेंकोब्ब का चयन करना चाहिए।

हैचरी/आपूर्तिकर्ता का चयन

मुर्गी की नस्ल एवं इसकी आपूर्ति के लिए उचित हैचरी का चयन अति आवश्यक है। हैचरी का चयन करते समय, मुख्य रूप से कई महत्वपूर्ण कारकों जैसे कि हैचरी की पहुंच, हैचरी का ट्रैक रिकॉर्ड, गुणवत्ता, आनुवंशिक विविधता, रोगमुक्त ब्रूड स्टॉक और जैव सुरक्षा प्रोटोकॉल पर ध्यान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैचरी से ही नस्लों को खरीदना चाहिए।

रिकॉर्ड रखना

ज्यादातर किसान अच्छे रिकॉर्ड रखने के महत्व को नजरअंदाज करते हैं। उत्पादन रजिस्टर, लागत रजिस्टर, फीड रजिस्टर, टीकाकरण रजिस्टर, रोग एवं मृत्यु दर रजिस्टर एवं अन्य सभी रजिस्टर को अच्छे से बनाये रखना चाहिए। सबसे ज्यादा लागत आहार में आती है। इसका मतलब है कि इसे प्रति पक्षी, प्रति दिन खिलाए गए ग्राम के स्तर पर तौला जाना चाहिए और उत्पादन दक्षता स्थापित करने के लिए साप्ताहिक आधार पर वजन का नमूना लिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त टीकाकरण का भी अच्छे से रिकॉर्ड रखना चाहिए।

मुर्गी पालन एक लाभदायक एवं टिकाऊ व्यवसाय है, जो ग्रामीण विकास और खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। यदि सही तरीके से किया जाए, तो मुर्गी पालन किसानों और उद्यमियों के लिए आय का उत्कृष्ट स्रोत बन सकता है। ■